1 कबीरा खड़ा बज़ार में मांगे सब की ख़ैर ।
न कहू से दोस्ती न कहू से बैर ॥

2 बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिल्या कोई ।
जो मन खोजा आपना, तो मुझ से बुरा न कोई ॥

3 काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
पल में प्रलय हो गयी, बहूरी करोगे कब ॥

4 बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं फल लागें अति दूर ॥

5 साईं इतना दीजिए जा में कुटुंब समाए ।
मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाए ॥

6 माया मरी, न मन मरा, मर मर गए शरीर।
आशा तृष्णा न मरी, कह गए दास कबीर ॥

7 दुख में सिमरन सब करें सुख में करे न कोए ।
जो सुख में सिमरन करे तो दुख काहे को होए ॥

8 ऐसी वानी बोलिए मन का आपा खोए ।
अपना तन शीतल करे औरन को सुख होए ॥

9 जाति न पूछो साधु की पूछ लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तलवार की, पड़ी रहें दो मियाँ ॥

10 जीवत समझे जीवत बुझे जीवत ही करो आस ।
जीवत करम की फाँस न काटी, मोए मुक्ति की आस ॥

11 मांगन मरन समान है मत कोई मांगे भीक ।
मांगन से मरना भला यह सत गुरु की सीख ॥

12 कबीर मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर ।
पाछे पाछे हर फिरे कहत कबीर कबीर ॥